दिनांक 3 अक्टूबर, 2018 को विकास भारती द्वारा टाना भगत स्मारक चिंगरी, बिशुनपुर, गुमला में ग्राम प्रधानों, महिला समूहों, आदिम जनजातियों के सम्मेलन व पुरस्कार वितरण समारोह–सह–सम्मान समारोह में माननीया राज्यपाल जी के अभिभाषण के मुख्य बिन्दु:–

रउरे मनके जोहार! आप सभी को मेरा नमस्कार!

- हमके आइज जतरा भगत की जन्मस्थली चिंगरी में रउरे मन से भेंटाल पर बहुते बेश लागत हे।
- स्वतंत्रता सेनानी जतरा टाना भगत अहिंसा टाना भगत आंदोलन के जनक रहे हैं। टाना भगत इनके द्वारा निरंतर अहिंसा आन्दोलन की शंखनाद चिंगरी के इस पवित्र भूमि से करते थे।
- टाना भगत राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी के सिद्धांतों एवं धरती आबा बिरसा मुण्डा के उपदेशों को पूरी तरह मानने व अपनाने वाले रहे हैं। उन्होंने अंधविश्वास के प्रति लोगों को जागरूक करने, नशापान उन्मूलन एवं अहिंसा के सिद्धांतों को जन–जन तक फैलाने का महत्त्वपूर्ण कार्य किया है। देश के जंग–ए–आज़ादी में अपनी अहम भूमिका अदा की।
- सन् 1921 ई० में जब देशभर में महात्मा गाँधी द्वारा नागरिक अवज्ञा आंदोलन प्रारम्भ किया गया तो टाना भगतों ने सिदू भगत के नेतृत्व में स्वतंत्रता आंदोलन में भाग लिया था क्योंकि महात्मा गाँधी तथा जतरा भगत या बिरसा मुण्डा के उद्देश्यों में काफी हद तक समानता थी।

- टाना भगतों ने चरखा चलाना, खादी वस्त्र धारण करना स्वीकार किया तथा विदेशी सामानों का बहिष्कार किया था। यह कहने में कतई संकोच नहीं होगी कि महात्मा गाँधी के नेतृत्व में टाना भगतों ने तन–मन–धन से हिस्सा लिया था।
- स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात सरकार द्वारा टाना भगतों की सामाजिक–आर्थिक दशा में सुधार लाने हेतु व्यापक प्रयास किये गये। उनके बच्चों की शिक्षा पर विशेष ध्यान देने हेतु उनके लिए आवासीय विद्यालय प्रारम्भ किये गये। स्वतंत्रता संग्राम के दौरान अंग्रेजी सरकार द्वारा टाना भगतों की नीलामी की गई भूमि को वापस दिलाने के लिए टाना भगत रैयत Agricultural Land Restoration Act 1948 पारित किया गया जिसके तहत 1913-1942 ई० की अवधि के दौरान उनकी छिनी गई जमीन लौटाने का प्रावधान किया गया।
- कल राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी जी की जयंती पूरे देश में मनाई गई। मुझे खुशी है कि इस कार्यक्रम के तहत दिनांक 2 अक्टूबर, 2018 से 30 जनवरी, 2019 तक पदयात्रा एवं साइकल यात्रा के माध्यम से प्रतिदिन 10 किलो मीटर की यात्रा कर लगभग 15 हजार गांवों के लगभग 9 लाख लोगों को राष्ट्रपिता की जीवनी एवं उनके कार्यों से अवगत कराया जायेगा।

- विभिन्न स्कूलों, कॉलेजों में राष्ट्रपिता की जीवनी पर निबंध आदि प्रतियोगिता का आयोजन किया जायेगा। साथ ही लोगों को स्वच्छता हेतु प्रेरित किया जायेगा।
- हम सभी को राष्ट्रपिता के भावनाओं के अनुरूप महिलाओं/बेटियों का सम्मान करना चाहिये, अहिंसा का मार्ग अपनाना चाहिये, पर्यावरण की रक्षा करनी चाहिये, शिक्षा पर बल देना चाहिये, ग्रामीणों को स्वावलंबी बनाने हेतु प्रयास करना चाहिये।
- इस अवसर पर मैं आप सभी से कहना चाहूँगी कि हमारे राज्य की संस्कृति की विशिष्ट पहचान है। इसे अक्षुण्ण बनाये रखने की आवश्यकता है क्योंकि यदि हम अपनी संस्कृति को भूलेंगे, तो हमारी पहचान भी मिट जायेगी। अतः हमें अपनी संस्कृति के संरक्षण के प्रति पूर्णतः सचेत एवं सजग रहना होगा। हम कहीं भी रहें, अपने क्षेत्र से बाहर या अन्य देश में रहें, तो भी हमें अपनी संस्कृति, अपनी भाषा, रीति-रिवाज को नहीं भूलना चाहिये। संस्कृति परंपरा से आती है, हमने जो अपने पूर्वजों से प्राप्त किया, वही हम अपने भावी पीढ़ी को सौंपते हैं। अगर हम अपनी संस्कृति, परंपरा को भूल जायेंगे, तो हम भावी पीढ़ी को क्या दे पायेंगे? जिस दिन हम अपनी संस्कृति को छोड़ते हैं, उस दिन से ही हमारा नैतिक पतन प्रारंभ हो जाता है। आप सभी जानते हैं कि दुनिया के दूसरे राष्ट्र भी भारत देश की संस्कृति का सम्मान करते हैं, जो भारत माता के सभी संतान के लिए गर्व का विषय है।

- मेरे प्यारे भाइयों एवं बहनों, आज हमारा राष्ट्र स्वतंत्र है, मैं आप सभी से यह कहना चाहूँगी कि जिस उत्साह व उमंग के साथ आपके पूर्वजों ने इस राष्ट्र के लिए कार्य किया, उसी उत्साह व उमंग के साथ आप सभी भी अपने राष्ट्र के विकास के लिए कार्य करें, लोकतंत्र को मजबूत करने में अपनी सहभागिता दिखायें।
- आज हमारा देश तीव्र गति से विकास कर रहा है। यह कामयाबी हमने अपने बुद्धि, परिश्रम, ज्ञान–विज्ञान के बल पर हासिल की है। हमारे देश की ओर आज समस्त विश्व की निगाहें है। हमारी बातों पर दुनिया गंभीरता से विचार कर रही है।
- मुझे खुशी है कि पद्मश्री श्री अशोक भगत जी हमारे राज्य में परोपकार का अलख जगा रहे हैं तथा दूसरों को भी इस हेतु प्रेरित कर रहे हैं। उनके मार्गदर्शन में विकास भारती द्वारा सुदूरवर्ती पिछड़े ग्रामीण इलाकों में शिक्षा, कृषि, स्वास्थ्य, जल प्रबंधन, पर्यावरण, स्वच्छता आदि की दिशा में बेहतर कार्य किया जा रहा है। इसके लिए उन्हें तथा संस्था को बधाई देना चाहूँगी। इसी क्रम में आज ग्राम प्रधानों, महिला समूहों, आदिम जनजातियों के सम्मेलन व पुरस्कार वितरण समारोह–सह–सम्मान समारोह का आयोजन किया जा रहा है।
- मुझे यह जानकर अपार खुशी हो रही है कि समाजसेवी पद्मश्री श्री अशोक भगत की अगुवाई में यह संस्था लोगों को व्यवसायिक शिक्षा/रोजगारपरक शिक्षा (Vocational

Courses/Job Oriented Courses) सुलभ कराकर उन्हें रोजगार से जोड़ने के साथ महिला सशक्तिकरण (Women Empowerment) की दिशा में कार्य कर रही है।

- दुनिया में ऐसा कोई भी देश नहीं है जहाँ महिलाओं को नजरअंदाज करते हुए आर्थिक विकास संभव हुआ है। महिलाओं को विकास की मुख्यधारा से जोड़े बिना किसी समाज, राज्य एवं देश के आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक विकास की कल्पना ही नहीं की जा सकती है। ऐसा मैं इसलिए नहीं कह रही हूँ कि मैं महिला हूँ।
- यह सच्चाई है कि आज अनवरत संघर्ष के बल पर देश में महिलाओं ने विभिन्न क्षेत्रों में सफलताएँ हासिल कर पुरूषों के कंधे-से-कंधे मिलाकर कार्य कर रही है। ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाओं में साक्षरता बढ़ी है और वे स्वरोजगार के जरिये आत्मनिर्भरता की ओर कदम बढ़ा रही है। वे गाँवों में पंचायत स्तर पर भी नेतृत्व प्रदान कर रही है।
- रसोईघर तक की ही दहलीज तक सीमित रहनेवाली महिलायें अब इससे उपर उठकर नये जोश के साथ सामाजिक दायित्व की भूमिका निभाते हुए दिखाई दे रही है। अपने सपनों को साकार करने के लिए महिलाओं ने गरीबी और सामाजिक बँधनों को तोड़ते हुए हर क्षेत्र में अपनी पहचान कायम की है। ये सुधार जाहिर तौर पर चेतना का प्रतीक है लेकिन विकास के लम्बे सफर के बावजूद भारी तादाद में महिलाएँ अधिकारों के लिए अभी भी संघर्षरत है। इसमें गाँवों

में रहनेवाली महिलाओं की संख्या अधिक है। उन्हें अपने अधिकारों और दायित्वों के प्रति जागरूक होना होगा। जागरूकता के अभाव में वे स्वरोजगार में बहुत पीछे हैं।

- आज एक तरफ महिलायें जहाँ सीढ़ी–दर–सीढ़ी सफलता की ओर कदम बढ़ा रही हैं तो वहीं 21वीं सदी में आज बाल–विवाह, कन्या भ्रूण–हत्या, डायन–प्रथा, महिलाओं के प्रति यौन हिंसा, दहेज–प्रताड़ना जैसी सामाजिक बुराइयाँ हमारे समाज में बड़े पैमाने पर मौजूद हैं, यह बहुत दु:खद है। सभी के जागरूक होने से न केवल इसके तादाद में कमी आयेगी, बल्कि सभी पढ़–लिखकर इन रूढ़ियों से लड़ना चाहेंगी। उनमें कुछ कर दिखाने का जज़्बा भी है और साहस भी।
- इस अवसर मैं आप सभी जागरूक महिलाओं के साथ तमाम बुद्धिजीवियों का आह्वान करना चाहूँगी कि सभी को जागरूक करने का कार्य करें। जागरूकता बढ़ने से वे अपने समाज के साथ राज्य एवं देश के विकास में भी योगदान कर सकती हैं।

जय हिन्द! जय झारखंड!